'करूण रस का आस्वाद'

डॉ. रमा
प्राचार्या, हंसराज कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

1. प्रस्तावना

'करुणा' मानवीय जीवन की मूल आवश्यकता है। करुणा नहीं होती तो मनुष्यता नहीं होती। साहित्यकारों ने जीवन में करुणा के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इसे जीवन का सार बताया है। आदिकाल से लेकर अब तक समाज इसलिए चलायमान है क्योंकि उसमें करुणा का भाव है। करुणा न हो तो मनुष्य एक दूसरे से संबंध स्थापित नहीं करता। साहित्य में करुण रस का आस्वाद ईश्वरी माना गया है। करुणा का गुण सबको नहीं मिलता है। भारतीय साहित्य में करुण रस की उपयोगिता अन्य रसों से अधिक मानी गई है क्योंकि कविता का आरंभ ही आदिकवि वाल्मीकि के करुण क्रंदन से मानी जाती है।

2. अधिगम का उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप निम्नलिखित कार्य कर सकने में सक्षम हो जाएंगे:

(1) रस की भाव-भूमि से परिचित होंगे।
(2) करुण रस और उसके आचार्यों से परिचित होंगे।
(3) साहित्य और करुण रस के संबंध को समझ सकेंगे।
(4) करुण रस और मानवीय संबंध से अवगत हो सकेंगे।
(5) साहित्य में करुण रस की यात्रा से परिचित होंगे।

3. विषय-प्रवेश

मनुष्य जीवन में करुणा का महत्व अनादि काल से ही चला आ रहा है तथा साहित्य में भी करुण रस के आस्वाद को दैवीय कहकर उसकी उपयोगिता को दर्शाया गया है। यहाँ पर करुण रस पर विस्तृत चर्चा करने से पहले 'रस' पर एक विहंगम दृष्टि डालना आवश्यक प्रतीत होता है।

भारतीय काव्यशास्त्र में 'रस' का स्थान सर्वोपरि है। आचार्य भरतमुनि ने अपने ग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में रस पर गंभीर और व्यवस्थित चिंतन किया है। 'नाटक' के संदर्भ में रस की विवेचना करते हुए उन्होंने कहा है **"विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।"** अर्थात्

विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। 'रस' के संदर्भ में वे अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' के छठे अध्याय में लिखते हैं **"स्थायिभावानास्वादयन्ति"**। अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से स्थायी भावों की ही परिणति 'रस' के रूप में होती है।

संस्कृत में 'रस' शब्द की उत्पत्ति **'रसस्यते असो इति रसाः'** के रूप में मानी गई है जिसका अर्थ है- आस्वादन करने योग्य। साहित्य में अस्वादन का अर्थ अध्ययन द्वारा ग्रहण किए गए आनंद से है। आचार्य भरतमुनि ने 'नाट्यशास्त्र' में रस की व्युत्पत्तिमूलक परिभाषा देते हुए प्रश्न किया है **"अत्राह–रस इति क: पदार्थ**? फिर नाट्यरस को आस्वाद पदार्थ मानते हुए लिखा है **"आस्वाद्यत्वात् इति रसः"।** अर्थात् रस वह है जिसका आस्वादन किया जा सके। अत: काव्य को पढने, सुनने अथवा उस पर आधारित नाटक देखने से जो आनन्द प्राप्त होता है, वही 'रस' कहलाता है।

'रस' की निष्पत्ति और रसास्वादन के संदर्भ में संयोग की महत्ता को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं **"यथाहि नानाव्यंजनौषधिद्रव्यसंयोगाद्रस निष्पत्तिर्भवति, यथा हि गुडादीभिद्रव्यै व्यंजनैरोषधिभिश्व षाडवादयो रसा निवर्तन्ते तथा नानाभावोपगता अपि स्थायिनो भावा रसत्वमाप्नुवन्तीति।"** अर्थात् जैसे गुडादि द्रव्य, व्यंजन, औषधि को मिलाकर षाडवादि से विलक्षण पेय बनते हैं, उसी प्रकार अनेकानेक भावों से संयुक्त होकर स्थायी भाव रस तत्त्व बनकर काव्य में उत्पन्न होता है। इस परिभाषा के माध्यम से यह स्पष्ट हो जाता है कि भाव ही रस के मूल कारण होते हैं। यही भाव रस के विविध अंगों से मिलकर रस दशा को प्राप्त होते हैं।

जिन अंगों की बात यहाँ की गयी है उनकी संख्या चार है–स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव, व्यभिचार भाव

1. **स्थायी भाव :** मनुष्य के ह्रदय में स्थायी रूप से रहने वाले भाव स्थायी भाव कहलाते हैं।
2. **विभाव :** स्थायी भाव को जगाने वाले और उद्दीप्त करने वाले कारण विभाव कहते हैं। विभाव दो तरह के होते हैं–

   (क) आलम्बन

   (ख) उद्दीपन
3. **अनुभाव :** स्थायी भाव के जाग्रत होने तथा उद्दीप्त होने पर आश्रय की शारीरिक चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं। अनुभाव पांच प्रकार के होते हैं–

(क) कायिक

(ख) वाचिक

(ग) मानसिक

(घ) सात्विक

(ङ) आहार्य।

4. **संचारी भाव :** जाग्रत स्थायी भाव को पुष्ट करने के लिए कुछ समय के लिए जगकर लुप्त हो जाने वाले भाव संचारी या व्यभिचारी भाव कहलाते हैं। जैसे–वन में शेर को देखकर भयभीत व्यक्ति को ध्यान आ जाये कि आठ दिन पूर्व शेर ने एक व्यक्ति को मार दिया था। यह स्मृति संचारी भाव होगा।

विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भावों के संयोग से पुष्ट होने वाले स्थायी भाव रस रूप में परिणत होकर मनुष्य को आनंदित और आह्लादित करते हैं। कभी-कभी कविता या नाटक के नायक से साधारणीकृत होकर पाठक या दर्शक विरेचित भी होता है। विरेचन और साधारणीकरण की स्थिति में सहृदय विविध रसों का अनुभव करता है। विविध आचार्यों ने इस रसों की संख्या 'नौ' मानी है। इन नव रसों में श्रृंगार रस, हास्य रस, करूण रस, वीर रस, रौद्र, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत और शांत रस आते हैं। इन सभी रसों में आचार्यों ने 'करूण रस' को महत्त्वपूर्ण माना है। भवभूति ने तो "एको रस: करूण एव" कहकर करूण रस को ही एकमात्र रस कहा है। करूणा का महत्त्व मनुष्य जीवन में अनन्तकाल से ही रहा है। स्पष्ट है कि साहित्य में भी करूण रस के आस्वाद को अलौकिक कहकर उसकी उपयोगिता को अंकित किया गया है। अत: विविध आचार्यों के मतों को ध्यान में रखते हुए यहाँ 'करूण रस' पर विस्तार से चर्चा की गई है।

4. करुण रस एवं उसके आचार्य

करुण रस की परिभाषा : विभिन्न मत

सर्वप्रथम भरत मुनि द्‌वारा करूण रस की व्याख्या की गई और उन्हीं के हस्तक्षेप से रस की उपयोगिता को साहित्यकारों ने स्वीकार किया। वह करुण रस का स्थायी भाव 'शोक' मानते हैं। करुण रस की उत्पत्ति शापजन्य क्लेश विनिपात, इष्टजन-विप्रयोग, विभव-नाश, वध, बन्धन, विद्रव अर्थात् पलायन, अपघात, व्यसन अर्थात् आपत्ति आदि विभावों के संयोग से होती है।

भरतमुनि ने अपने महाग्रंथ 'नाट्यशास्त्र' में जिन आठ रसों की व्याख्या की है उसमें करूण रस को विशेष महत्त्व दिया है। भरत ने करूण रस की परिभाषा देते हुए कहा है– 'रौद्रात्तु करूणो रस:।' धनंजय और विश्वनाथ जैसे प्रमुख भारतीय काव्य के चिंतकों ने भी करूण रस को साहित्य का आधार माना है। संस्कृत के कई मनीषियों ने करूण रस की परिभाषा अपने ढंग से दी है। आचार्य धनंजय ने 'इष्टनाशादनिष्टाप्तौ शोकात्मा करूणोडनुतम्' कहकर तो आचार्य विश्वनाथ ने–'इष्टनाशादनिष्टाप्ते: करूणाख्यो रसो भवेत' कहकर करूण रस को परिभाषित किया है। अपनी भावनात्मक जीवंतता के कारण करूण रस कवियों को हमेशा प्रिय रहा क्योंकि इसके माध्यम से कवि अपना दु:ख और पीडा अभिव्यक्त कर लेते हैं। हिंदी के वरिष्ठ आचार्य चिन्तामणि ने–

'इष्टनाश कि अनिष्ट की, आगम ते जो होइ।

दु:ख सोक थाई जहाँ, भाव करुन सोइ'

कहकर करूण रस को महत्ता प्रदान की है तो रीतिकालीन कविता के आचार्य और महाकवि देव ने–

'विनठे ईठ अनीठ सुनि, मन में उपजत सोग।

आसा छूटे चार विधि, करुण बखानत लोग' कहकर करुण रस को नया स्वरूप दिया है।

5. प्रश्नों की स्वयं जांच करना

5.1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'ना' में दीजिए-

(i) करुण रस से हास्य का भाव उत्पन्न होता है। (.....)

(ii) करुण रस का स्थायी भाव रौद्र है (.....)

5.2 कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) .....का गुण सबको नहीं मिलता है। (हास्य, करुणा, दया)

(ii) 'नाट्यशास्त्र'.....की रचना है (भरतमुनि, आनंदवर्धन, भवभूति)

(iii) मनुष्य के ह्रदय में स्थायी रूप से रहने वाले भाव .....कहते है। (भाव, विभाव, स्थायी भाव)

(iv) करुण रस का .....कपोत के समान है (वर्ण, रूप, रंग)

(iiv) भरतमुनि ने कुल ..... रसों की व्याख्या की है। (आठ, नौ, ग्यारह)

6. साहित्य और करूण रस

आदिकवि वाल्मीकि द्वारा रचित महाकाव्य **'रामायण'** भारतीय साहित्य में ही नहीं बल्कि विश्व साहित्य की अद्वितीय और अनोखी रचना है। संस्कृत साहित्य में रामायण जैसा काव्य दूसरा कोई अन्य नहीं हुआ। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना ऐसे समय में की जब सीखने के लिए उनके सामने कोई दूसरी रचना नहीं थी। वाल्मीकि ने अपनी इस मौलिक रचना में जीवन के विभिन्न पक्षों का सुन्दर चित्र खींचने के साथ ही साथ उसे जीवंत भी बना दिया है। प्रकृति-चित्रण, संवाद-संयोजन, विषय-प्रतिपादन के साथ-साथ रस, अलंकार, छंद, शब्द-शक्ति का उचित प्रयोग कर रामायण को विश्व की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं में से एक बना दिया।

काव्य-रचना और अध्ययन दोनों का प्रयोजन 'रसास्वादन' है। साथ ही 'आनन्द' की प्राप्ति भी है। वाल्मीकि द्वारा करुण-रस की बहुविधि व्याख्या की गई। रामायण के कई मार्मिक प्रसंग करुण रस में ही हैं। भारतीय मनीषी रामायण में करुण रस के प्राधान्य को स्वीकारते हैं। रसवादी विद्वान तो इसमें करुण रस की प्रधानता को स्वीकारते ही हैं साथ ही अन्य कलावादी मर्मज्ञ भी रामायण को करुण रस की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण काव्य मानते हैं।

भारतीय साहित्य परम्परा में महर्षि वाल्मीकि को आदिकवि के नाम से जाना जाता है। 'रामायण' को आदिकाव्य की उपमा दी गई है। साहित्य इतिहास में रामायण प्रथम रचना है, जिसमें मानव-जीवन की सभी घटनाओं और स्थितियों का वर्णन मिलता है। रामायण से पहले लिखे गए सभी महाकाव्यों में देवी-देवताओं का गुणगान ही मिलता है। रामायण की रचना का आधार लौकिक नहीं है बल्कि अलौकिक है। ऐसा माना जाता है कि राम की कथा सर्वप्रथम महादेव शंकर ने पार्वती जी को सुनाई थी। कथा सुनते-सुनते पार्वती को नींद आ गई। जिस स्थान पर कथा सुनाई जा रही थी, वहाँ पास ही कौवे का घोंसला था जिसके भीतर बैठे कौए ने पूरी कथा सुन ली। कौए का पुनर्जन्म काकभुशुण्डी के रूप में हुआ, जिन्होंने यह कथा गरुड़ को सुनाई| महादेव शिव के मुख से निकली राम की यह पावन गाथा लोक में 'अध्यात्म-रामायण' के नाम से बहुचर्चित हुई। महर्षि वाल्मीकि ने राम की इसी कथा को संस्कृत-श्लोकों में लिखा जो विश्वभर में वाल्मीकि-रामायण के नाम से जानी जाती है। 'रामायण' का अर्थ - 'राम का अयन' अर्थात् 'राम की यात्रा' है। रामायण में राम की जीवन-यात्रा को बहुत ही गहराई और रोचकता से बाल्मीकि ने प्रस्तुत किया है। रामायण में 1. बाल काण्ड, 2. अयोध्या काण्ड, 3. अरण्य काण्ड, 4. किष्किन्धा काण्ड, 5. सुन्दर काण्ड, 6. लंका काण्ड 7. उत्तर काण्ड कुल सात कांड हैं। वाल्मीकि द्वारा रचित यह महाकाव्य भारतीय महाकाव्यों की प्रेरणा-स्रोत बना। रामायण

की लोकप्रियता इस कदर बढी है कि इसकी कथा पर आधारित विभिन्न भाषाओं में विभिन्न रामायणों की रचना की गई। हिन्दी, तमिल और बंगला भाषाओं में भी रामायण लिखी गई। उत्तर भारत में **गोस्वामी तुलसीदास** ने **रामचरितमानस** की रचना की जिसमें राम के जीवन की व्याख्या के साथ ही साथ करूण रस की विविध छवियां प्रस्तुत हैं। दक्षिण में **कंबन** ने भी रामायण पर अपना महाकाव्य रचा और बंगला में **कृत्तिवास रामायण** की भी रचना की गई।

रामायण की लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें घटित कई घटनाओं का चित्र पूरे भारत में कई स्थानों पर दृश्यों-चित्रों और भित्ति-चित्र के रूप में भी अंकित किया गया है। ये चित्र केवल भारतीय मन्दिरों में ही नहीं बल्कि इंडोनेशिया, जावा, कम्बोडिया, चीन और जापान आदि देशों के मन्दिरों में भी देखे जा सकते हैं।

करुण रस के संबंध में एक मान्यता है कि एक समय तमसा नदी के किनारे वाल्मीकि ने देखा कि प्रेम-क्रीड़ा में मग्न क्रौंच पक्षी के जोड़े को किसी शिकारी ने तीर से आहत कर दिया है जिसमें से एक क्रौंच की मृत्यु हो गई। प्रेमी जोड़े को अलग होते देख उन्हें भयंकर दुःख हुआ। क्रौंची का विलाप सुनकर वाल्मीकि का मन इतना द्रवित हो उठा कि वह श्लोक के रूप में सामने आया -

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगम: शाश्वती: समा:

यत क्रौञ्च-मिथुनादेकमवधी: काममोहितम्[1]

इस पंक्ति का भाव है कि -"रे निषाद! तुम शाश्वत प्रतिष्ठा कभी न पा सकोगे, क्योंकि तुमने प्रेम में डूबे पक्षी-युगल में से एक को मार दिया है।" ऐसा माना जाता है कि महामानव वाल्मीकि का यह करुण स्वर ब्रह्मा के कानों में पड़ा जिससे प्रभावित होकर वह प्रकट हुए और वाल्मीकि को रामायण लिखने को कहा।

रामायण का प्रमुख रस करुण है। संयोग और वियोग दोनों पक्षों की सुन्दर व्याख्या इसमें मिलती है साथ ही रौद्र, अद्भुत, वीर जैसे महत्वपूर्ण रसों की योजना भी देखने को मिलती है। किन्तु रामायण मूलत: करुणरस-प्रधान काव्य ही है क्योंकि सीता के परित्याग के बाद राम के हृदय की करुणा जिन शब्दों में फूटी है वह करुणा की चरम अवस्था है। **'ध्वन्यालोक'** के चौथे भाग में **आनन्दवर्धन** ने करुण रस की महत्ता को स्वीकारते हुए कहा है- 'रामायणं ही करुणो रसः स्वयमादिकविना सूत्रितः **"शोकः श्लोकत्वमागतः"**

[1] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक 15

इत्येवंवादिना, निर्व्यूढश्च स एव सीतात्यन्त-वियोग-पर्यन्तमेव स्व-प्रबन्धानुपरचयता।" कहने का अर्थ यह है कि आदिकवि उस शोक को अभिव्यक्ति देने में मर्मस्पर्शी प्रसंग प्रस्तुत करते हैं, जहाँ राम जी के वन-प्रस्थान करते समय सारा नगर अत्यंत पीड़ित हो गया, उस करुणावसर पर न केवल रघुवंशी-परिवार अपितु समस्त अयोध्या-नगरी शोकाग्नि में जल रही थी।[2]

रामायण वास्तव में मानव-जीवन का बहुआयामी दर्शन कराता है। भगवान् राम द्वारा छोटे भाई लक्ष्मण को मूर्छित देखकर राम के मन में जो विशाल पीड़ा ने जन्म लिया उसे वाल्मीकि इन शब्दों लिखते हैं–

देशे देशे कलत्राणि देशे देशे च बान्धवाः

तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।[3]

रावण द्वारा अपहरण के समय सीता के साथ किए गए दुर्व्यवहार की व्याख्या करुण रस द्वारा ही संभव थी। सीता विलाप करती हुई सहायता के लिए चिल्लाती हैं। यह करुण-रस की अद्भुत छवि है। रामायण और रामचरित मानस सहित अन्य भाषाओं में लिखे गये। रामायण में यह भाग करूणा की चरम अवस्था है।

'उत्तररामचरित' विख्यात कवि **भवभूति** का विश्वचर्चित नाटक है। रामायण के उत्तराकाण्ड से प्रेरित भवभूति के इस नाटक में राम के जीवन की करुण अवस्था का वर्णन है। राम ने सामाजिक जिम्मेदारी निभाने के लिए सीता को त्याग तो दिया लेकिन उनके लिए प्रेम की जो घनीभूत संवेदना थी वह और तीव्र हो गई। भवभूति ने अपनी कल्पना से कथा के मूल में बदलाव करते हुए दोनों को पुनः मिला दिया है जिससे नाटक सुखान्त बन गया है। साथ ही उन्होंने अपनी कल्पना से कई अनोखी घटनाओं का सृजन किया जो पहले किसी ने नहीं किया। भवभूति की अद्भुत कल्पना से नाटक नए सन्दर्भ को जोड़ते हुए आगे बढ़ता है।

भवभूति ने अपनी कल्पना और अद्भुत नाट्य शिल्प से नाटक को रोचकता प्रदान की है। भवभूति की रचनाओं में संस्कृत साहित्य का पांडित्यपूर्ण प्रदर्शन देखने को मिलता है। व्याकरण, अलंकार शास्त्र के मर्मज्ञ विद्वान भवभूति की रचनाएँ मानवीय संवेदना का अनोखा दृश्य प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाओं में विभिन्न रस देखने को मिलते हैं लेकिन उन्हें करुण रस का मर्म अच्छे से पता है। वे करूण रस के आचार्य हैं। करुण रस

---

[2] वाल्मीकिरामायण-2.40.35

[3] वाल्मीकि रामायण 6.101.15

के चित्रण में उनके जैसा कोई दूसरा कवि नहीं है। विश्वसाहित्य की बात करें तो उनकी करुण अभिव्यंजना अन्य पर भारी पड़ जाएगी। उनके बारे में कहा गया है - 'कारुण्यं भवभूतिरेव तुनते।' विद्वानों का मानना है है कि उत्तररामचरित का सृजन उन्होंने करुण रस की अभिव्यक्ति के लिए ही किया जिसकी पुष्टि वह नाटक के तीसरे अंक में स्वयं करते हैं-

एको रसः करुण एव निमित्त भेदात्

भिन्न पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्त्तान्।

आवर्त्तबुदमुदतरंगमयान् विकारान्

अम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समग्रम्।।

भावार्थ- एकमात्र मुख्य रस करुण ही होता है, यही भिन्न-भिन्न रसों को प्राप्त होता है। जिस प्रकार एक ही रूप वाला स्थिर जल अनेक प्रकार के भँवर, बुदबुद तथा तरंगों के रूप में बदलता हुआ भी मूलतः एक ही बना रहता है, उसी प्रकार एक ही करुण रस विभिन्न कारणों से अनेक रसों का रूप धारण करता है।

मध्यकालीन कविता में करुण रस की मनोरम अभिव्यक्ति हुई है। **सूर, तुलसी, कबीर., मंझन** आदि ने अपने साहित्य में करुण रस की मार्मिक स्थितियों का वर्णन किया है। कबीर की कविताओं में जनजीवन की पीड़ा की करूण अभिव्यक्ति हुई है। कबीर अपने एक दोहे में कहते हैं–

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय
मुई खाल की सांस से, सार भसम हो जाय

कबीर की कविताओं में करूणा की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। इस कविता में कबीर असहाय व्यक्ति का पक्ष लेते हुए कहते हैं कि कभी ऐसे व्यक्ति को परेशान नहीं करना चाहिए क्योंकि उसकी हाय परमात्मा तक पहुँचती है। कबीर जीवों पर दया करने के लिए प्रेरित करते हैं–

बकरी पाती खात है ताकि काढी खाल
जो नर बकरी खात है ताको कौन हवाल।

कबीर की कविताओं में आम जनता के लिए जो पीड़ा की भावना है उसमें करूणा की कई अनोखी छवियाँ देखने को मिलती हैं। कबीर ने ही अपनी कविता में पहली बार हाशिए के समाज को चित्रित कर उनके प्रति दया की भावना का विस्तार किया है।

जन कविता की समृद्धशाली परम्परा **तुलसी** से शुरू होती है। **रामचरितमानस** में काव्य के सारे रस पूरी जीवंतता से सामने आते हैं। तुलसी को रससिद्ध कवि कहा जाता है। संयोग और वियोग के मनोहारी रूपों को अभिव्यक्त करने में तुलसी का कोई तोड़ नहीं है। रामचरितमानस में भी करूण की विभिन्न छवियाँ हैं। सीता स्वयंवर में जब धनुष उठाने की शर्त कोई नहीं पूरा कर पाया तब जनक को चिंता हुई। वह रोने लगे और वहां उपस्थित राजाओं से बोले- 'तजहु आस जिननिज गृह जाहू-, लिखा न विधि वैदेही विवाहू' अर्थात- राजाओं आप लोग घर जाइए शायद सीता का विवाह ब्रम्हा ने लिखा ही नहीं है। श्रीराम से विवाह के बाद सीता और उनकी बहनों की विदाई का मार्मिक दृश्य मिलता है। सीता की माता सुनयना वैदेही-वैदेही करके विलाप करने लगीं। एक अन्य स्थान पर जब राम सीता और लक्ष्मण सहित वन के लिए निकले तो अयोध्या के निवासियों ने रोना आरंभ कर दिया। अपने प्रिय राजकुमारों को इस तरह वनवास के लिए जाते देख उनका हृदय चीत्कार कर उठा। ऐसा लगा जैसे वन में आग लग गई और लोग जहाँ थे वहीं ठिठक गए। केवट ने जब राम जी को गंगा पार करा दिया तब राम ने मजदूरी रूप में उसे अपनी अंगूठी दी। राम के स्नेह से केवट का मन भीग गया और बोला–

नाथ आज मैं काह न पावा, मिटे दोष दुख: दारिद दावा,
बहुत काल मैं कीन्हीं मजूरी, आजु दीन्ह बिधिबनि अलि मूरी।

राम को वन की ओर जाते हुए देख उनके पिता दशरथ छाती पीटकर 'हे राम, हे राम' कहकर विलाप करने लगे। राम के अति प्रिय महाबलशाली भाई भरत को जब पिता दशरथ की मृत्यु का पता चला तो उनका विलाप करुणा की चरम सीमा तक चला जाता है। जंगल-जंगल जब राम सीता को खोज रहे थे तब का दृश्य भी करुणा से भरा हुआ है। वीरान जंगल में राम और लक्ष्मण पशु-पक्षियों से भी सीता का पता पूछते हुए रो पड़ते हैं। रामचरित मानस में करुण रस की सबसे बड़ी अभिव्यंजना तब होती है जब लक्ष्मण को बाण लग जाता है। मूर्छित लक्ष्मण को देखकर वहां उपस्थित सभी मनुष्य और जानवर गहरा विलाप करने लगे। राम का रुदन इतना द्रवित करने वाला था कि वहां उपस्थित सभी की ऑंखें भर गईं–

सुत मित नारि भवन परिवारा, होहिं जाहिं जग वारहिं बारा,
अस विचारि जियं जागहु ताता, मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।

एक अन्य स्थान पर भी करुण रस का सजीव चित्रण देखने को मिलता है–

करि बिलाप सब रोवहिं रानी। महा बिपति किमि जाइ बखानी।
सुनि बिलाप दुखहू दुखु लागा। धीरजहु कर धीरज कर धीरजु भागा।।

अर्थात सभी रानियाँ विलाप करके रो रही हैं। उस महान् विपत्ति का कैसे -वर्णन किया जाए? उस समय के विलाप को सुनकर दुःख को भी दुःख लगा और धीरज का भी धीरज भाग गया।

रीतिकालीन कविता के सर्वाधिक ज्ञानी और काव्य लक्षण के मर्मज्ञ विद्वान् **केशव** के काव्य में विभिन्न रसों की अभिव्यक्तियाँ मिलती हैं। करुण रस उनका प्रिय रस है। उनके काव्य में करुण रस की अद्भुत उपस्थिति है। राम और लक्ष्मण को दुष्टों के संहार हेतु विश्वामित्र के संग भेजते समय पिता दशरथ की मनःस्थिति का चित्रण केशव ने इस प्रकार किया है–

राम चलत नृप के जुग लोचन,

बारि भरित भए बारिद-रोचन।

पाइन परि रिषि के सजि मौनहिं,

"केसव' उठि गए भीतर भौनहिं।।

युद्ध में लक्ष्मण को मूर्च्छा लगने पर राम का विलाप सभी को द्रवित कर देता है। केशव लिखते हैं–

बारक लक्ष्मन मोहि बिलोकौ,

मोकहं प्रान चले तजि, रोकौ।

हौं सुमरौं गुन केतकि तेरे,

सोदर पुत्र सहायक मेरे।।

आधुनिक काल तक आते-आते कविता का भाव पक्ष वैचारिक हो गया लेकिन उसमें व्याप्त करुणा का भाव बना रहा। करुण रस के बिना कोई कवि स्वयं को सिद्ध नहीं कर सकता है। अन्य रसों की अपेक्षा करुण रस जीवन का सार है।

महाप्राण **निराला** की कविताओं में करुणा का विराट संसार है जिसमें वह स्वयं जीते हैं। **'सरोज-स्मृति'** उनकी हिंदी की सबसे लोकप्रिय और मार्मिक शोक कविता है। साहित्य के विद्वानों ने इस कविता को शोक-गीत भी कहा है। मानवीय पीड़ा का स्वर उनकी कविता में पूरी संवेदना के साथ दिखाई देता है।1935 में प्रकाशित इस कविता में कवि निराला ने अपनी युवा पुत्री सरोज के निधन पर उपजी पीड़ा को लिखा नहीं बल्कि रोया है। निराला की पीड़ा में डूबी आत्मा का विलाप जनमन को विह्वल कर देता है। मात्र उन्नीस वर्ष में ही महाप्राण निराला ने अपनी प्रिय पुत्री सरोज को खोकर जैसे अपना

सबकुछ खो दिया। अपनी पुत्री के लिए उनके अन्दर की ममता और वात्सल्य को इस कविता में महसूस किया जा सकता है। अपने जीवन काल में महाकवि के नाम से विख्यात और सेवा भावना के लिए चर्चित कवि निराला को आजीवन यही पीड़ा रही कि वह अपनी पुत्री सरोज के लिए कुछ नहीं कर सके। इस कविता की पीड़ा को इसी से समझा जा सकता है कि जिस निराला को लोग सामाजिक जीवन का कवि मानते थे, जिनके बारे में यह चर्चा थी कि वह हमेशा अपनी सुख-सुविधा दूसरों को सौंप देते थे, उन्हें अपनी ही बेटी के लिए करने को कुछ नहीं था। वह लिखते हैं–

धन्ये, मैं पिता निरर्थ था, कुछ भी तेरे हित न कर सका,

जाना तो अर्थागमोपाय, पर रहा सदा संकुचित-काय।

लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर, हारता रहा मैं स्वार्थ-समर,

शुचिते, पहनाकर चीनाशुक, रख सका न तुझे अतः दधिमुख।।[4]

अपने विद्रोही स्वाभाव और दलितों के प्रति करुणा का भाव रखने के लिए उन्हें कई बार अपमान भी सहन करना पड़ा। सरोज का विवाह भी वह बहुत दिखावे के साथ करते हैं। रूढ़िगत परम्परा के भंजक तो वह बहुत पहले से ही थे। ब्राह्मण का अभिमान उन्हें कभी था ही नहीं। 'सरोज-स्मृति' में करुण रस की पंक्तियाँ पाठक को मर्माहत कर देती हैं–

मुझ भाग्यहीन की तू संबल, युग वर्ष बाद जब हुई विकल,

दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज, जो नही कही।[5]

पुत्री से अलग होकर पिता की पीड़ा का भाव करुणा का ही विस्तार करता है। निराला ने इस कविता से उन तमाम पिताओं की पीड़ा को रोया है जो अपने जीवन में धन का आभाव झेलते हैं और अपनी संतानों के लिए कुछ बेहतर नहीं कर पाते हैं।

निराला की भांति **महादेवी वर्मा** का जीवन भी स्नेह और प्रेम से रिक्त रहा। दुःख उनके जीवन का स्थायी भाव रहा। महादेवी का दुःख वैश्विक है। उनके अन्दर की पीड़ा का आधार सामाजिक परिवेश है। वह अपने दुःख से अधिक समाज के दुःख को अभिव्यक्ति देती हैं। महादेवी के लिए दुःख पहली स्वीकृति है। वह अपने संपर्क में आने वाले से भी दुःख और पीड़ा की मांग करती हैं। वह लिखती हैं–

---

[4] निराला, राग विराग, सं. राम विलास शर्मा, पृष्ठ 80

[5] निराला, राग विराग, सं. राम विलास शर्मा, पृष्ठ 91

पर शेष नही होगी यह, मेरे प्राणों की क्रीड़ा,

तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुममें ढूँढूगीं पीड़ा।[6]

पीड़ा और दुःख महादेवी के यहाँ जीवन-दर्शन है। जो सामान्य पीड़ा नहीं है। यह दुःख कहीं जीवन है तो कहीं मृत्यु है। प्रकृति उनकी पीड़ा को अभिव्यक्त करने में सहायक है। महादेवी के पीड़ा और दुःख में निराशा और अवसाद नहीं है। वह दुःख को साधना मानती हैं-

मिलन का मत नाम ले, मैं विरह में चिर हूँ।

एक ज्वाला के बिना मैं राख का घर हूँ।।

करुणा का भाव महादेवी को निखारता है। उनके एकांत का साथी है। वेदना का रहस्य विषाद नहीं हो सकता है। वेदना कलुषता को दूर करती है। वेदना दुःख से नहीं बल्कि अन्तःचेतना से उपजती है। दुःख स्थायी नहीं होता है लेकिन वेदना स्थायी होती है। वेदना की आग में तपकर कुंदन बनना जीवन की प्रक्रिया है और रहस्य भी। महादेवी उसी वेदना को रहस्य रूप में जीती हैं। उनके पास सब है लेकिन कुछ नहीं है-

'मैं नीर भरी दुःख की बदली,

विस्तृत नभ का कोई कोना,

मेरा न कभी अपना होना।

नागार्जुन समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण कवि हैं। आम जनता की भाषा में आज जीवन की संवेदना को अभिव्यक्त करना नागार्जुन की कविता का सार है। वैसे तो नागार्जुन की कविताओं में सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियां देखने को मिलती हैं लेकिन जहाँ वह समाज के हाशिए पर खड़े लोगों के साथ अन्याय होते देखते हैं, वहां उनकी कविता में करुणा का भाव उत्पन्न हो जाता है। 'आकाल और उसके बाद' कविता में वह मनुष्य ही नहीं पशु-पक्षियों के प्रति अपनी करुणा व्यक्त करते हैं–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास।
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।।

[6] महादेवी वर्मा, नीहार, पृष्ठ 88

इस कविता में कवि अकाल से उपजी भूख की त्रासदी से त्रस्त आम आदमी के दुःख को स्वर दिया है। प्रगतिशील विचारधारा के विख्यात साहित्यकार नागार्जुन की कविताओं में शोषित जनता के प्रति करुणा का भाव है। वह लिखते हैं–

जमींदार हैं साहूकार हैं, बनियां है, व्यापारी हैं,
अन्दर विकट कसाई बाहर खद्दर धारी हैं।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि करूणा मनुष्य-जीवन का एक अहम् अंश है। यह करूणा ही व्यक्ति को मानवता के निकट ले जाती है और मानव तथा मानवेतर प्राणियों के सुख-दुख को समझने और महसूस करने का सामर्थ्य देती है। साहित्य में तो करूण रस के आस्वाद को दैवीय बताया गया है। इस प्रकार जीवन और साहित्य में करूणा और करूण रस की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। यह जीवन और साहित्य दोनों के लिए ही बहुत आवश्यक और उपयोगी है।

7. प्रश्नों का जांच स्वयं करना

प्रश्न क- निम्नलिखित कथनों पर सही/गलत के निशान लगाइए-

(1) करुण रस का पहला काव्य तुलसी द्वारा लिखा गया (सही/गलत)

(2) रामायण में करुण रस का उदहारण नहीं मिलता है (सही/गलत)

(3) काव्य रचना और अध्ययन दोनों का प्रयोजन 'रसास्वादन' है। (सही/गलत)

प्रश्न ख- सही शब्द के चुनाव द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) भारतीय मनीषी ..... में करुण रस के प्राधान्य को स्वीकारते हैं। (रामायण, महाभारत, गीता)

(2) रामायण से पहले लिखे गए सभी .....में देवी-देवताओं का गुणगान है। (गीतिकाव्यों, खंडकाव्यों, महाकाव्यों)

(3) 'अध्यात्म-रामायण'.....के मुख से निकली रामकथा है(शिव, राम, सीता)

7.1 अभ्यास के लिए प्रश्न

प्रश्न क-निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

(1) रस की विस्तार पूर्वक व्याख्या कीजिए।

(2) करूण रस की परिभाषा और स्वरूप पर विचार कीजिए।

(3) हिंदी साहित्य और करुण रस के संबंध पर विचार कीजिए?

(4) संस्कृत साहित्य और करुण रस के संबंध पर विचार कीजिए।

(5) राम आधारित कथाओं में करुण रस का स्वरुप लिखिए।

(6) करुण रस के आचार्यों का परिचय दीजिए?

(7) करुण रस साहित्य का आधार है, स्पष्ट कीजिए?

ख) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ बताइए-

करुणा, निजता, परम्परा, लोकप्रियता, संस्कृति, प्राधान्य, विचार

ग) निम्नलिखित वाक्यों का पदक्रम ठीक कीजिए

(1) वास्तव में मानव जीवन का बहुआयामी रामायण दर्शन कराता है।

(2) करुण रस से दया का आता है भाव।

(3) रामचरित मानस है रचना की तुलसी।

(4) निराला की कविता है स्मृति सरोज।

(5) उत्तररामचरित है भवभूति नाटक का।